

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस यानी आत्मावलोकन का दिन



भाषा दुनिया भर के लोगों को जोड़ती है। भाषा का उपयोग भावनाओं को व्यक्त करने, दूसरों के साथ बंधन, सिखाने, सिखने, विचारों को व्यक्त करने, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए आधार तैयार करने आदि के लिए किया जाता है। पूरी दुनिया में भारतीय और अन्य लोग तरह-तरह की भाषाएं बोलते हैं। हर क्षेत्र में हर भाषा की एक अलग पहचान होती है जो लोगों को एक साथ बांधती है।

अपनी मातृभाषा जानने और बोलने से सभी को लाभ होता है। हमें सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए, लेकिन अपनी भाषा की बलि देकर नहीं। हम एक औपनिवेशिक मानसिकता के शिकार रहे हैं जिसे हमें अपनी जड़ों को भूलने के लिए बनाया गया था। हमने अपनी महान और सबसे वैज्ञानिक भाषा, संस्कृत को पहले ही त्याग दिया है, और हम धीरे-धीरे अपनी मातृभाषा, स्थानीय और राष्ट्रीय भाषा को छोड़ रहे हैं। इस मानसिकता का हमारे जीवन पर आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं कि कैसे हमारी मूल भाषाओं को खोने से हम प्रभावित हुए हैं और हमें इस पर पुनर्विचार करने और इस पर काम करने की आवश्यकता क्यों है।

हमें प्राचीन काल से ही आध्यात्मिक शक्ति के रूप में पहचाना जाता रहा है, जो आज भी पूरे विश्व में हर किसी के जीवन की सबसे अधिक आवश्यकता है। जब से हमने संस्कृत और अन्य स्थानीय भाषाओं को त्याग दिया है या कम आकना शुरू कर दिया है तब से हमने बड़े पैमाने पर सामाजिक और आर्थिक मजबूती खो दी है।

हमें यूरोप और अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों को संस्कृत भाषा पर जोर देने के लिए धन्यवाद देना चाहिए, यह पता लगाने के बाद कि दैनिक आधार पर श्लोकों का जाप करने से याददाश्त तेज होती है, बुद्धि में सुधार होता है और मानसिकता विकसित होती है।

हमने धर्मनिरपेक्षता और स्वार्थी राजनीतिक उद्देश्यों की आड़ में संस्कृत भाषा को उद्देश्यपूर्ण ढंग से मिटा दिया है। इतना ही नहीं, हमने संस्कृत में लिखे गए महान वैदिक साहित्य का भी अध्ययन नहीं किया है, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी की महान अवधारणाएं हैं, साथ ही विभिन्न शाखाओं के सभी महत्वपूर्ण विषय हैं, जिनका हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि मातृभाषा बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों में किसी भी नई

अवधारणा को समझने में सहायता करती है। इस तथ्य को नई शिक्षा नीति में संबोधित किया गया है ताकि एक छात्र को अवधारणाओं और तर्कों के साथ विकसित किया जा सके, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आत्मविश्वास विकसित करने के लिए, जो आज की पीढ़ी में कई विदेशी भाषाओं के जबरन और मनगढ़ंत महिमामंडन के परिणामस्वरूप खो गया है।

किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व और निरंतरता इस बात से निर्धारित होती है कि लोग अपनी जड़ों से कितनी मजबूती से जुड़े हुए हैं, जिनमें से एक उनकी अपनी भाषा भी है। पिछले कुछ वर्षों में हमने ऐसी मानसिकता विकसित की है कि हमने अपनी भाषाओं को नजरअंदाज कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप हमारी जड़ों से धीरे-धीरे दूर होते जा रहे हैं। अब समय आ गया है कि मातृभाषा और राष्ट्र भाषा का पुरजोर समर्थन किया जाए और नई शिक्षा नीति को तत्काल लागू करके इसे हकीकत में बदला जाए।

स्थानीय भाषा किसी देश के सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में भी सहायक होती है। जब हम जीडीपी के मामले में शीर्ष 20 देशों को देखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि उनमें से कई अपनी मूल भाषा को प्राथमिकता देते हैं। यह दृष्टिकोण निस्संदेह हमें वैश्विक संचार भाषा के रूप में अंग्रेजी का उपयोग करते हुए अधिक आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से आगे बढ़ने में सहायता करेगा।

भावनाओं को मातृभाषा या स्थानीय भाषा में सही ढंग से व्यक्त किया जा सकता है, जो परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ-साथ समाज को भी बांधती है। अपनत्व पर भाषा का ऐसा असर हुआ है कि लोग कोरोना महामारी के दौरान एक-दूसरे की मदद के लिए खुलकर सामने आए।

पूरे वर्ष, हर गली और नुक्कड़ पर विभिन्न त्यौहार मनाए जाते हैं, जो कई लोगों को खुशी देते हैं और अर्थव्यवस्था को चलाते हैं; प्रमुख कारणों में से एक मातृभाषा है।

आइए हम स्वामी तुलसीदास, वाल्मीकि ऋषि, श्री भारतेन्दु हरिश्चंद्र, श्री पु. ल. देशपांडे, साने गुरुजी, श्री सुब्रमण्य भारती, श्री बसवराज और हमारी भाषाओं और संस्कृति के कई अन्य महान योगदानकर्ताओं को याद करें।

आइए हम सभी भाषाओं का सम्मान करने के लिए, और अपनी आने वाली पीढ़ियों को विकसित करने और अपनी जड़ों को बरकरार रखने के लिए मातृभाषा और राष्ट्रीय भाषा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए संघर्ष किए बिना अपनी भाषाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एकजुट हों।

प्रत्येक माता-पिता, स्कूल और सरकार को राजनीति से अधिक नई शिक्षा नीतियों के कार्यान्वयन को प्राथमिकता देनी चाहिए।

सभी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

7875212161